International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 28-11-2024, Accepted: 29-12-2024, Published: 13-01-2025
Volume 11, Issue 1, 2025, Page No. 5-7

हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले मे कुल देवी देवता के प्रति आस्था का एक समाजशास्त्री अध्ययन (चारमाला गांव के विशेष संदर्भ मे)

हरीश आजाद
शोधार्थी, समाजशास्त्र और सामाजिक नृविज्ञान विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश, भारत

सारांश
हिंदू संस्कृति में कुल देवी/देवता की पूजा का विशेष महत्व है और उनका पूजन प्राचीन समय से चली आ रही प्रथाओं में से एक माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि कुलदेवी और कुलदेवता वंश के संरक्षक होते हैं, जो पीढ़ियों तक परिवार का मार्गदर्शन और सुरक्षा करते हैं।वैदिक ज्योतिष और हिंदू आध्यात्मिकता में गहराई से रची–बसी यह प्रथा, पैतृक संबंधों और पारिवारिक नियति को नियंत्रित करने वाली दैवीय शक्तियों के प्रति श्रद्धा को दर्शाती है। पुराने समय यह मान्यता है कि कुल देवी या देवता के पूजन से घर में समृद्धि बनी रहती है। वे ही पारिवारिक समस्या का हल निकलते है।

मूलशब्द: कुल देवी/देवता, आस्था, पूजा पाठ

भारत मे बहुत से समाज या जाति के कूल देवी/देवता होते है इसके अलावा पितृदेव भी होते है भारतीय कई हजारों वर्षों से अपने कूल देवी/देवता की पूजा करते आ रहे है। कुल के पूर्वजों ने, कुल के वरिष्ठों ने अपने लिए उपयुक्त कुल देवता या कुल देवी का चुनाव कर उन्हें पूजना आरम्भ कर दिया और उसके लिए एक निश्चित स्थान पर एक मंदिर बनवाया जिससे एक आध्यात्मिक और पारलौकिक शक्ति से उनका कुल जुड़ा रहे और वहां से उसकी रक्षा होती रहे।

कुलदेवीश शब्द का तात्पर्य परिवार की संरक्षक देवी के रूप में पूजी जाने वाली देवी से है, जबकि श्कुलदेवताश वंश के संरक्षक संत के रूप में सम्मानित पुरुष देवता से संबंधित माने जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि ये देवता परिवार के सदस्यों के कल्याण, समृद्धि और सुरक्षा की आदि को देखते हैं। कुलदेवी और कुलदेवता की पूजा परिवार के भीतर एकता और सद्भाव को बढ़ावा देती रहती है। जब हम कुल देवी या देवता की पूजा के लिए एक साथ आते हैं तो सभी सदस्य अपने बंधन को मजबूत करते हैं और एकजुटता, सम्मान और प्रेम की भावना को बढ़ावा देते हैं।

कुलदेवी और कुलदेवता को समर्पित अनुष्ठानों में संलग्न होने से आध्यात्मिक विकास और ज्ञान को बढ़ावा मिलता है। पूजा से पहले इनका पूजन इसलिए किया जाता है क्योंकि इन्हें परम पिता परमात्मा का संदेशवाहक माना जाता है और इनके माध्यम से हमारा कोई भी संदेश उन तक पहुंचाया जा सकता है। गाव मे आज भी कोई कार्य इनकी आज्ञा के बगेर नहीं किया जाता है जो कुछ भी करना होता है उससे से पहले उनसे पूछा जाता है (https://www.herzindagi.com)

साहित्य समीक्षा

हरिदत्त वेदलकार की पुस्तक "भारत का सांस्कृतिक इतिहास" (1962), मे बताया गया है, मध्य युग की भारतीय कला की सबसे बड़ी विशेषता वास्तु का अधिक विकास है। इस युग मे वास्तु कला की विभिन शैलीयों का विकास हुआ स्वदेश तथा विदेश में भव्य मंदिरों का निर्माण हुआ। इस समय वास्तु से भारतीय मूर्ति और स्थापत्य कला अपने सबसे मनोरमा रूप में प्रकट हुई उसमें गुप्त युग की नवीनता तो नहीं रही। किंतु लालित्य बहुत बढ़ गया मध्य युग को दो बड़े भागों में बांटा जाता है। पूर्व मध्य काल तथा उत्तर मध्य काल, पूर्व मध्यकाल में कला काफी उन्नत रही; तंत्र वाद के प्रभाव से कुछ स्थानों पर अश्लील मूर्तियों को प्रधानता मिली। मूर्तियों एवं मंदिरों की शिल्पी में पहले जैसी पुरानी मौलिकता लुप्त हो गई वह पुरानी रीढ़यो का पालन करते हुए अपनी रचना था। उनको अधिक से अधिक भड़किला बनाने का यत्न करने लगे।

श्याम चरण दुबे की पुस्तक भारतीय ग्राम, (1975) मे ब्राह्मण के घर के पास एक छोटा सा शिव का मंदिर है; दूसरा देवालय देशमुख के घर के पास की छोटी सी पहाड़ी पर है, जहा कई देवी देवतताओ की मूर्तिया है गांव के दो चबूतरों पर वानर– देव हनुमान की प्रतिमाए है कई स्वर्ण जातियों के घरों पर इन देवताओ की तस्वीरे या मूर्तिया है जिनके पास मूर्तिया है वे उन्हे रोज स्नान करते है और इन्हे भोजन का भोग लगाया जाता है इन्हे अक्सर परिवार के देवी देवता कहा जाता है तस्वीरों की त्योहार पर पूजा की जाती है।

राम पुजारी के अनुसार (2024), कुलदेवता का रहस्य सुख–दुख, जन्म–मरण, तीज–त्योहार, और आपत्तियों में उन्हें सबसे पहले याद किया जाता है। वे ही हैं जो कई पीढ़ियों से अपने कुल की रक्षा करते आ रहे हैं।

भवानी सिंह पतावत (2022), हर एक जाति या वंश की अलग अलग कुलदेवी होती है ऐसी धार्मिक मान्यता है कि उस देवी की उस वंश या जाती विशेष पर असीम कृपा होती है हर वंश के लोग इन देवियों की पूजा आराधना करते आए है तथा अपना इछित मनोरथ पूरा करते है।

गांवों में अक्सर कुलदेवी और कुलदेवता के मंदिर होते हैं जहां आपके समाज के लोग पूजा–पाठ के लिए जाते हैं। ये परम्परा हिन्दू धर्म में सदियों से चली आ रही है। हिन्दू परिवार में या किसी जाति अथवा समुदाय में कुलदेवी या कुलदेवता उनके धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। ये वो देवी और देवता होते हैं जिनकी पूजा उस कुल या परिवार के लोग अपने पूर्वजों के समय से करते आ रहे होते हैं।(https://navbharattimes.indiatimes.com)

महादू देशमुख, विश्वनाथ के अनुसार (2017), 'आंध' आदिवासियों मे चौड, आसीत,कपाल और भीषण यह चार गोत्र दिखाई देते हैं। इन गोत्रों में आंध जमाती का विभाजन हुआ है। लेकिन आंध समाज को आज इन गोत्रों के संबंध में जानकारी नहीं है। आज मात्र उपनाम से ही कुल का परिचय होता है। कुलो के नाम, वृक्षा, प्राणी, परिवार के गुण आदि पर देखे जाते हैं। जैसे डुकरे, मेडे, मोरे मैंडके आदि। आंध समाज के उपनामों की विशेषता होती है कि अधिक तर उपनामों के अंतिम अक्षर पर मात्रा होती

है कुछ उपनामों को बिना मात्रा के देखा जाता है। प्रकृति की गोद मे जीवनयापन करने के कारण उनके नाम तथा उपनाम उन्हे प्रकृति से ही मिले है ऐसा लगता है।

समस्या

आधुनिकता का दौर इतनी तीव्र गति से स्थापित हो रहा है, कि मनुष्य को इस पर सोचने और विचार करने के लिए समय नहीं मिल पा रहा है। 15 से 20 वर्ष पुर्व मनुष्य का समाजीकरण एक भारतीय संस्कृति के अनुकूलन हुआ है। परंतु वर्तमान में नई पीढ़ी का समाजीकरण अत्यधिक रूप से आधुनिकी पद्धति के अनुसार हो रहा है। जिसके कारण पीढ़ी दर पीढ़ी उसमें अत्याधिक दूरी आ रही है और वह अपने आप को समाज से दूर रहने मे खुश रहता हैं। जिससे यह कहना गलत नहीं होगा, कि आधुनिकरण का भारतीय संस्कृति और भारतीय ग्रामीण परंपरा पर सीधा प्रभाव देखाई पड़ता है ग्रामीण स्तर पर परंपरा उनके कुल देवी देवता से देखी जाती है इसलिए शोध कर्ता का इस पर अध्ययन करने की जिज्ञासा पैदा हुई।

उदेश्य

1. गाव मे कुल देवी देवता की पूजा पाठ के तोर तरीकों का विश्लेषण करना।
2. सामाजिक दिनचर्या मे कूल देवी देवता के योगदान की पहचान करना।

कार्यप्रणाली

कूल के देवी/देवता की स्तिथि को समाज मे जानने के लिए शोधकर्ता के द्वारा गुणात्मक विधि को लिया गया है साथ ही साथ आंकड़ों को प्राथमिक स्त्रोतों के द्वारा देखा गया है। जिसमे शोधकर्ता क्षेत्र मे जाकर स्तिथि की पहचान करता है। प्राथमिक स्रोत के तहत साक्षात्कार को लिया जाएगा, जिसमें शोधकर्ता को प्राथमिक जानकारी तथा एक उचित जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया जाएगा। द्वितीयक स्त्रोतों में शोध कर्ता अध्ययन संबंधित पुस्तकों, वेबसाइट, पत्र– पत्रिकाओं को प्रयोग में लिया जाएगा। इसमें साक्षात्कार विधि, अवलोकन, अध्ययन को रखा गया है। साक्षात्कार एवं अवलोकन से उतरदातों से विषय की सही पहचान करने का प्रयास किया जाएगा।

अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान हिमाचल प्रदेश में मुख्य रूप से पहाड़ी क्षेत्र प्रागैतिहासिक काल से ही बसा हुआ है। इसे देव भूमि के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि हर गाव मे अलग अलग संस्कृति तथा अलग देवी देवता को देखा जाता है। हर घर का एक कूल का देवी/देवता होता है। हिमाचल प्रदेश का एक जिला कुल्लू है। कुल्लू घाटी को पहले कुलंथपीठ कहा जाता था। कुलंथपीठ का शाब्दिक अर्थ है रहने योग्य दुनिया का अंत। कुल्लू घाटी भारत में देवताओं की घाटी रही है। हिमाचल प्रदेश में बसा एक खूबसूरत पर्यटक स्थल है कुल्लु। बरसों से इसकी खूबसूरती और हरियाली पर्यटकों को अपनी ओर खींचती आई है। विज नदी के किनारे बसा यह स्थान अपने यहां मनाए जाने वाले रंगबिरंगे दशहरा के लिए प्रसिद्ध है। यहां 17वीं शताब्दी में निर्मित रघुनाथजी का मंदिर भी है। जो हिंदुओं का प्रमुख तीर्थ स्थान है। सिल्वर वैली के नाम से मशहूर यह जगह केवल सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियों के लिए ही नहीं बल्कि एडवेंचर स्पोर्ट के लिए भी प्रसिद्ध है।

चरमाला गाव कुल्लू जिले मे स्थित है। जो कुल्लू से लगभग 120 की. मी की दूरी पर है। जिसकी तहसील निरमंड है यह एक छोटा सा गाव है। जिसमे लगभग 28 घर है शोध कर्ता के द्वारा इसी गावों को अपने अध्ययन के लिए लिया गया है जहा पर कुल देवी/देवता पर अध्ययन किया गया है।

गावों मे कुल देवी/देवता के नाम–

1. ठेगरु
2. मशाण
3. जमाड़
4. वेषणों

पूजा पाठ की क्रिया

कुल के देवी–देवता की पूजा पाठ समय समय पर की जाती है। पूजा पाठ करने से देवी देवता खुश रहते है। और अपना आशीर्वाद परिवार पर बनाए रखते है। यदि परिवार वाले की ओर से इनकी पूजा पाठ मे कोई ढील आदि हो तो इसका प्रभाव परिवार के सदस्य पर दिखाई पड़ता है। कुछ न कुछ अनहोनी परिवार मे होती रहती है। ये कुल देवी/देवता के द्वारा एक संकेत होता है की वो किसी बात से तो नाराज चल रहे है।

पूजा पाठ के कर्मकांड आदि केई तरीके से किए जाते है। जिसमे जेसे धूप–बती देवता को छोड़ना, हर एक त्योहार पर भोजन छोड़ना साथ ही साथ साफ सफई पूर्ण रूप से करना भोजन छोड़ना यानि उनके नाम की गुड़ की रोटी को तैयार करना और उनको अर्पित करना।

कुल देवी देवता का स्थान

गांव मे कूल देवी देवता को रखने का स्थान अलग अलग जगह पर होता है। इन कुल देवता का आकार अलग अलग हो सकता है कहा जाता है। प्राचीन बाजुर्गों को जेसे जेसे साफ ओर चिकने पथर मिले और उन्हे घर लाया तथा उसके पश्चात उन्हों ने उसमे अपने कुल देवी देवता की पूजा पाठ शुरू कर ली। आज के समय मे वे ही पथर दिखाई देते है। जिसे परिवार के द्वारा पूजा जाता है अत्यधिक तोर पर तो आटलु (प्राचीन घर के ऊपर छोटा मंजिल कमरा), घर के नजदीक के खेतों मे (बहुत से पथरो को एक जगह पर ईकठा करके उसके बीच मे जगह बना कर रखा जाता है।

परिवार की आस्था

अत्यधिक तोर पर यह देखा गया है कि गाव मे हर परिवार किसी न किसी रूप मे अपने कुल देवी देवता को मान एवं उन पर विश्वास कर रहे है। जब कभी भी परिवार पर किसी प्रकर की मुसीबत आदि आती है। तो सबसे पहले वे अपने कुल देवी देवता से उस मुसीबत का निवारण करने के लिए आराधना करते है । वे सब कुछ अपने कुल देवी देवता पर छोड़ देते है की जो उन्हे मंजूर है वो ही होगा।

इसके अलावा अगर कोई और परिवार को कष्ट या लड़ाई झगड़ा करने का प्रयास करता है। तो वे अपने कुल देवता को याद करके उसको लगने यानि कि उसका बुरा होने के लिए कहते है। ऐसे करने से उनका मानना होता है । कि उनकी मुसीबत या किसी भी प्रकर का संकट उनके ऊपर से खत्म हो जायगी और वह दूसरे पर चला जाएगा यह कहना गलत नहीं होगा यह पूरा आलोकीक शक्ति पर बदले लेने की भावना पर आधारित होता है।

कुल देवी/देवता का निवारण

इंसान यदि कोई भी क्रिया आदि करता है और उसको लगता है कि ये मेने गलत कदम उठा लिया है। तो वो उसको वापिस करना चाहता है तो उसके पास इसको वापिस करने का भी हल जरूर होता होता है। इसका मतलव यह है की यदि परिवार के द्वारा कुल देवी/देवता को किसी पर लगाया जाता है यानि किसी का बुरा करने के लिए बदले की भावना से देवता से आराधना की होती है कि उसका बुरा होना चाहिए जब यह आलोकीक शक्ति उस पर काम शुरु करने लगती है तो वो उसका निवारण करने की सोचता है। यदि उसको ज्योतिष के

द्वारा पता लग जाता है कि ये किसके द्वारा किया गया है तो वो उससे माफी माँगता ओर उसका निवारण करने के लिया मनाता है।

इसके निवारण के लिए बकरा लगता है यानि की कुल देवी/देवता को बकरे को प्रसाद के रूप मे देना पड़ता है। यह एक बलि देवता को लगती है यह बकरा उसके द्वारा लगता है। जिसके ऊपर कूल देवी देवता की आलोकीक शक्ति का प्रभाव हुआ होता है। अंत मे उस बकरे को परिवार के द्वारा पकाया जाता है। ओर वो दोनों तरफ के परिवार को ग्रहण करना होता है इस से कुल देवता/देवी उस परिवार को माफ़ कर लेती है और उसका निवारण हो जाता है।

निष्कर्ष

आधुनिकता के इस दौर मे मनुष्य इतने आगे बड़ता चला गया है। जिसके चलते वह अपनी संस्कृति, परंपरा आदि को भुलता चला जा रहा है। यह एक बाह्य रूप है शोध कर्ता के द्वारा देखा गया कि गाव मे अभी भी बहुत से काम आदि पुरानी परंपरा आदि से होते है। इससे यह पता चलता है की जो लोग देवी देवता के प्रति आस्था रखते है वे पूर्णत रूप से अपने अस्थिक जमीनी स्तर से जुड़े हुए है। वे हर एक नए कार्ये को करने से पहले अपने कुल देवी/देवता की आराधना करते है और उनसे राय लेते है। जिस कार्ये को वे शुरू करना चाहते है क्या वह उनके और उनके परिवार के हित मे है या नहीं उसके बाद ही वे अपनी क्रिया आदि को शुरू करते है। वे अत्यधिक रूप से कुल देवी/देवता पर अभी भी आश्रित रहते है।और उनका मानना है, जो कुछ भी होगा वो कुल देवी देवता के द्वारा किया गया है।

शोध कर्ता ने दूसरी ओर अध्ययन मे यह भी पाया कि जो परिवार देवी/देवता मे विश्वास नहीं करते, उनको अपने कुल के देवी देवता के बारे मे कोई ज्ञान नहीं और वे इसके बारे मे जानकारी भी नहीं रखना चाहते और ना ही अपनी पीड़ी को बताना चाहते। इस से यह पता चलता है कि है। गाव मे दोनों तरफ के पक्ष देखने को मिलते है ऐसा नहीं है कि गाव मे कुल देवी देवता के प्रति आस्था आदि पूर्णत खत्म हो गई है।

References

1. दुबे, श्याम चरण, (1975), "भारतीय ग्राम", नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
2. वेदलकार हरिदत्त, (1962) "भारत का सांस्कृतिक इतिहास", करोल बाग, नई दिल्ली, प्रकाशक राम लाल पूरी
3. महादू देशमुख, विश्वनाथ, (2017), "आंध आदिवासियों लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन" शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
4. पुजारी, राम, (2024) "कुल देवता का रहस्य", भारत BuCAudio Pedia Pvt Ltd, heeraganj, paryapgarh
5. https://www.herzindagi.com/hindi/astrology/astrology-remedies-tips/significance-of-kuldevi-devta-puja-article-267767
6. https://navbharattimes.indiatimes.com
7. https://hindi.news18.com